# जिन पर हमें गर्व है

**स्वतंत्रता सेनानी श्री गजानंद वर्मा**

देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका अदा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों में नामदेव छीपा समाज की शख्सियत स्व.गजानन्द वर्मा(नरबानिया ) का नाम आज भी सम्मान पूर्वक लिया जाता है | उज्जैन (मध्यप्रदेश) निवासी श्री गजानन्द वर्मा का जन्म 16 दिसंबर 1923 को श्री लक्ष्मी नारायण जी वर्मा एवं श्रीमती जानकीबाई के घर में हुआ था|आपका लालन-पालन एवं शिक्षा उज्जैन में ही हुई| वहां से आपने साहित्य सुधाकर एवं साहित्य विशारद की डिग्रियां प्राप्त की |

श्री गजानंद वर्मा विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से संबन्धित आंदोलन में पूर्ण सक्रिय रहे| उन्होने लोकनायक जयप्रकाश नारायण तथा नेताजी सुभाषचंद्र बोस से प्रेरणा लेकर क्रांतिकारी कार्यों में गहरी रुचि ली थी| सन 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान **करो या मरो** के आव्हान पर आपने उत्साही एवं सक्रिय नौजवानों के साथ मिलकर 9 सदस्यों का एक समूह गठित किया जो सिर पर कफन बांध कर मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर सके| श्री वर्मा के साथी-सहयोगियों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नींद हराम कर के उन्हे भारत छोड़ने लिए मजबूर करने के उद्देश्य से उज्जैन नागदा के बीच असलोदा स्टेशन के समीप रेल की पटरियाँ उखाड़ी,टेलीफोन के तार काटे|इस प्रकरण के बाद वे उज्जैन छोड़कर मथुरा चले गए जहां उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया |परिणाम स्वरूप 1 वर्ष तक कठोर कारावास की सजा खानी पड़ी|

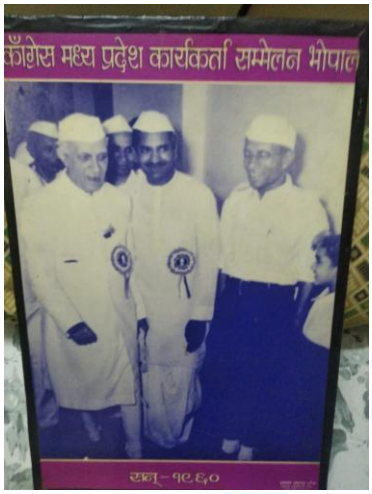


श्री गजानन्द वर्मा 1943 में जेल से मुक्त होने के बाद भी चुप नहीं बैठे और क्रांतिकारी गतिविधियों में ही लगे ही रहे|जेल से मुक्त होने के बाद नेताजी की आजाद हिंद फौज से प्रेरणा लेकर आजाद हिन्द सेवा दल का गठन किया | कालांतर में आपको ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा (स्टेट कांग्रेस) की उज्जैन शाखा के प्रधान सचिव का दायित्व दिया गया | उन्होने आजादी के बाद 1948 में मध्य भारत के निर्माण के अवसर पर आयोजित अधिवेशन की संपूर्ण व्यवस्थायें की |1952 में इंदौर में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन में 250 भाई बहनों को ले जाकर व्यवस्था में सहयोग किया |सन 1957 में कांग्रेस कमेटी के 62 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में सेवादल के 300 स्वयं-सेवकों एवं सेविकाओं को ले जाकर व्यवस्था में सहयोग किया और पूरे प्रदेश के 5000 स्वयंसेवकों के शिवराधिपति रहे|
आप 1960 में जबलपुर में आयोजित हुए शिविर के कांग्रेस अधिवेशनो में भी सेवादल शिविराधिपति रहे एवं प्रशंसनीय कार्य किया|
स्वतंत्रता सेनानी श्री गजानंद वर्मा 1952 से 1957 तक नगर निगम उज्जैन के सदस्य रहे | सन 1972 में अखिल कांग्रेस की रजत जयंती के अवसर पर आप को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण मध्यप्रदेश सरकार की ओर से प्रशस्ति पत्र तथा भारत सरकार की ओर से ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया गया |आप नगर स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक संघ के अध्यक्ष तथा संभागीय स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ के उपाध्यक्ष रहे |आपने समाज सेवा केंद्र तथा भारतीय शिशु कार्य परिषद की स्थापना भी की, जिनके माध्यम से बाल मंदिर विद्यालय का संचालन कार्य तथा अन्य विविध रचनात्मक कार्य किए|श्री वर्मा ने 1983 में दिल्ली में आयोजित कांग्रेस सेवादल की तृतीय में स्वागत अधिकारी के रूप में कार्य किया|इस रैली में 40000 स्वयंसेवक सम्मिलित हुये थे

जीवन पर्यंत आपने सिंहस्थ (कुम्भ )में आयोजित शिविरों सेवा दल कार्य कार्य किया|फलस्वरूप केंद्रीय कुंभ मेला समिति उज्जेन द्वारा भी आपको सम्मानित किया गया

|यहां यह भी उल्लेखनीय है कि श्री वर्मा को भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जीवन पर्यंत स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन दी गई|

**संबद्धता-** श्री गजानन्द वर्मा अनेक संस्थाओं से संबध रहे और उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की |आप मध्य प्रदेश आचार्य कुल संस्था के अध्यक्ष तथा ऊज्जेन शाखा के संरक्षक रहे| यह संस्था समाज को प्रबुद्ध,ज्ञानवान,संस्कारवान, श्रमनिष्ठ ,समाजनिष्ठ, ज्ञाननिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ राष्ट्रभक्त बनाने के उद्देश्य से स्थापित की गयी थी |श्री वर्मा मध्य भारत खादी संघ संस्था ग्वालियर के उपाध्यक्ष तथा जिला सर्वोदय मंडल उज्जैन के संस्थापक तथा अन्य कई संस्थाओं से संबद्ध रहे|

**सम्मान-** स्वर्गीय श्री गजानंद वर्मा को उनकी उल्लेखनीय राष्ट्र एवं समाज सेवाओं के लिए शासन-प्रशासन, राजनीतिक दलों तथा अन्य कई संस्थाओं के विशेष अवसरों पर सम्मानित किया गया| स्वतन्त्रता आंदोलन की 25 वीं वर्षगांठ के अवसर पर मध्यप्रदेश शासन की ओर से 1972 में भोपाल में स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्मान समारोह में भी आपको 15 अगस्त 1972 को सम्मानित किया गया था |सन 1973 में कांग्रेस सेवा दल की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष में आपको सम्मानित किया गया|श्री वर्मा के जीवनकाल के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर उज्जैन की विभिन्न संस्थाओं तथा शहर कांग्रेस कमेटी उज्जैन के संयुक्त तत्वाधान में सार्वजनिक अभिनंदन समारोह 17 मार्च 1996 को उज्जैन में आयोजित किया गया था| समारोह की अध्यक्षता तत्कालीन शालेय शिक्षा मंत्री श्री महेंद्र सिंह ने की थी , मुख्य अतिथि एसएन सुब्बाराव थे | श्री सुब्बाराव ने उद्बोधन में श्री गजानंद वर्मा के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि "यह सम्मान श्री वर्मा का सम्मान नहीं है बल्कि उस समर्पित देशभक्त का अभिनंदन है जिन्होंने आजादी के आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई है |उन्होंने गांधीजी के सिद्धांतों को अपनाया व खादी को धारण करते हुएसादगी पूर्ण कार्य किए |ऐसे अभिनंदनीय व्यक्तित्व के बीच मेरा आना अपने भाग्य की एक उपलब्धि मानता हूँ |"

इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष महेंद्र सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि प्रदेश शासन ने सदैव स्वतन्त्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका अदा करने वाले अग्रणी व्यक्तियों तथा स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान किया है |उन्होने कहा कि हमारी पार्टी ने श्री वर्माजी का अभिनंदन कर वास्तव में श्रेष्ठ कार्य किया है| वर्माजी ने कांग्रेस और देश की जो सेवा की है,वह सदैव याद रहेगी |

निसंदेह, श्री गजेंद्र वर्मा न केवल नामदेव छीपा समाज के बल्कि पूरे उज्जैन एवं मध्य प्रदेश प्रांत के गौरव थे|15 फरवरी 2005 को अपना नश्वर शरीर छोड़ा और इस संसार से विदा ली थी |वे अपनी वीरांगना धर्मपत्नी श्रीमती गिरिजा देवी व इकलोते पुत्र श्री अजय वर्मा

एवं  पुत्री श्रीमती कल्पना का भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गए थे| पूर्ण राजकीय सम्मान  से उज्जैन में आपका  अंतिमसंस्कार किया गया | बाद में आपकी वीरांगना श्रीमती गिरजा देवी ने भी 23 मार्च 2016 को अंतिम विदाई ले ली |श्री वर्मा कि स्मृतियों को सँजोकर रखना न केवल उनके परिवार का बल्कि हम सभी का परम दायित्व है|